सत्य मार्ग की खोज, सीरीज़-22

# स्वच्छता एवं पवित्रता


जमाअत इस्लामी हिन्द

दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, नई दिल्ली-110025

9650022638

www.islamsabkeliye.com

www.facebook.com/islamsabkeliyeofficial


(सल्ल.) : सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अर्थात उन पर अल्लाह की रहमत (दयालुता) और सलामती हो।

# स्वच्छता एवं पवित्रता

## मानव-जीवन का उद्देश्य

हमें और पूरे जगत को ख़ुदा ने पैदा किया है और उसने हम इन्सानों को सर्वश्रेष्ठ प्राणी (अशरफ़ुल- मख़लूक़ात) बनाया है। ख़ुदा ने अपनी योजना के तहत एक सीमित समय के लिए इन्सानों को धरती पर भेजा है। इन्सान के अन्दर वे सभी ताक़तें और सलाहियतें रखी गई हैं, जो उस योजना और मक़सद को पूरा करने के लिए ज़रूरी हैं। ख़ुदा ने हमारी हर ज़रूरत का सामान दुनिया में उपलब्ध किया है।

इन्सान को इस दुनिया में भेजे जाने का उद्देश्य वास्तव में यह है कि वह अपने पैदा करनेवाले ख़ुदा के मार्गदर्शन के तहत अपनी आत्मा को शुद्ध और विकसित करे। उसके अन्दर वे गुण पैदा करे जो ख़ुदा को पसन्द हैं और जिनको पैदा करने और परवान चढ़ाने का उसने आदेश दिया है। जैसे कि वह अपने स्रष्टा (ख़ुदा) को जाने, उससे उसका सम्बन्ध किस प्रकार का हो इसको समझे। उसके प्रति समर्पण और भक्ति की भावना, समस्त प्राणियों के प्रति दयाभाव, हमदर्दी, क्षमाशीलता, सेवाभाव, प्रेमभाव आदि पैदा करे। वह ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न करे। ख़ुदा की नाफ़रमानी से बचे। धोखा-फ़रेब, झूठ, कंजूसी, ज़ुल्म व ज़्यादती और अन्य गन्दे कामों से दूर रहे।

## शरीर की पवित्रता भी आवश्यक है

इन्सान की रूह को एक शरीर भी दिया गया है और इस शरीर की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बहुत-सी माद्दी और भौतिक चीज़ें प्रदान की गई हैं। इस शरीर के सम्बन्ध में बहुत से आदेश दिए गए हैं उनमें से एक आदेश यह भी है कि शरीर और इससे सम्बन्धित अन्य चीज़ों को पवित्र और पाक-साफ़ रखा जाए। इस्लाम चाहता है कि इन्सान का शरीर रूपी बर्तन भी पाक-साफ़ हो, और वह चीज़ भी पाक-साफ़ हो जो बर्तन के अन्दर है, यानी रूह या आत्मा।

सफ़ाई-सुथराई और स्वच्छता व पवित्रता का प्रभाव इन्सान के दिल और दिमाग़ पर तो पड़ता ही है, इन्सान और इन्सानी समाज की सेहत की बेहतरी का भी इससे बड़ा गहरा सम्बन्ध है। सफ़ाई-सुथराई को हर इन्सान फ़ितरी तौर पर पसन्द करता है, यह और बात है कि इसका तरीक़ा, मेयार और पैमाना लोगों में अलग-अलग होता है।

## इस्लाम में पवित्रता का महत्व

इस्लाम में सफ़ाई-सुथराई और पवित्रता की कितनी ज़्यादा अहमियत है, इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस्लाम ने अपनी ज़्यादातर इबादतों की अदाएगी और धार्मिक कामों के लिए सफ़ाई-सुथराई को अनिवार्य कर दिया है, अर्थात् पाक-साफ़ हुए बिना ये इबादतें की ही नहीं जा सकतीं। अगर कोई व्यक्ति पाकी और पवित्रता के बिना यह इबादत करता है, तो इस्लाम के अनुसार उसकी वह इबादत ख़ुदा के यहां क़बूल ही नहीं होगी, बल्कि ऐसा आदमी उसका अवज्ञाकारी साबित होगा और गुनहगार भी, जिसकी सज़ा उसे मरने के बाद पारलौकिक जीवन में मिलेगी। सफ़ाई और पवित्रता के सम्बन्ध में इस्लाम की यह विशेषता है।

इस्लाम की एक विशेषता यह भी है कि उसने केवल ऊपरी सफ़ाई-सुथराई पर ही जोर नहीं दिया, बल्कि वास्तविक पवित्रता की अवधारणा भी पेश की। यह कहना ज़्यादा उचित होगा कि इस्लाम ने सफ़ाई-सुथराई को पवित्रता प्रदान की है और हमें वास्तविक पवित्रता और उसकी रूह से अवगत कराया है।

इस्लाम में सफ़ाई-सुथराई और पाकी की जो अहमियत है, उसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰*) को अल्लाह की ओर से जब लोगों की रहनुमाई व मार्गदर्शन के मुख्य काम पर लगाया गया, उस समय अल्लाह ने उन्हें जो आदेश दिए उनमें एक आदेश सफ़ाई और पवित्रता का भी था। अल्लाह तआला क़ुरआन में फ़रमाता है—

**"ऐ ओढ़-लपेटकर लेटनेवाले! (पैग़म्बर मुहम्मद) उठो और ख़बरदार करो और अपने रब की बड़ाई का एलान करो और अपने कपड़े स्वच्छ रखो और गन्दगी से दूर रहो।"**

(क़ुरआन 74:1-5)

## स्वच्छता और ईमान

पाकी, सफ़ाई तथा स्वच्छता के बारे में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)ने इरशाद फ़रमाया—

**"ईमानवाला कभी नापाक (अपवित्र) नहीं रहता।"** (हदीस)

अर्थात् आप (सल्ल॰) का फ़रमान है कि अपवित्र और गन्दा रहनेवाला व्यक्ति ईमानवाला हो ही नहीं सकता। अगर वह कभी अपवित्र हो जाता है या कोई गन्दगी उसको लग जाती है तो वह इस हालत में देर तक नहीं रहता, बल्कि जल्द से जल्द पाक-साफ़ होने की कोशिश करता है। क्योंकि ईमानवाला तो साफ़-सुथरा और सदैव पवित्र रहता है। इसी प्रकार एक और जगह आप (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया—

**''स्वच्छता और पवित्रता व सफ़ाई-सुथराई आधा ईमान है।''**

(हदीस)

ईमान को दो भागों में बांटा जा सकता है। आधा ईमान तो यह है कि इन्सान अपनी आत्मा और रूह को गन्दी और अस्वच्छ न होने दे। अपने दिल और दिमाग़ को ग़लत विचारों, अधर्म और शिर्क, गुमराही और अंधकार से बचाए रखे। वह कोई अनैतिक और अश्लील काम न करे। वह उन विचारों, आस्थाओं और धारणाओं (अक़ीदों) को अपनाए, जो सत्य के अनुकूल हों और अपने विचारों और ख़यालों को शुद्ध रखे। अपने किरदार को अच्छा बनाए।

बाक़ी आधा ईमान यह है कि इन्सान बाहरी गन्दगियों को दूर करके अपने शरीर, कपड़े और जगह आदि की सफ़ाई पर पूरा ध्यान दे। इन्हीं दोनों प्रकार की सफ़ाई-सुथराई और स्वच्छता व पवित्रता से ईमान पूर्ण होता है। जो लोग अपने आपको इस प्रकार निर्मल और पाक-साफ़ रखते हैं, वे अपने पालनहार ख़ुदा के प्यारे बन जाते हैं।

## इस्लाम में स्वच्छता के कुछ उदाहरण

(1) हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने ग़ुस्लख़ाने में पेशाब करने से मना किया है, क्योंकि यह काम पवित्रता की दृष्टि से ठीक नहीं है। आप (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया—

**''तुममें से कोई व्यकित अपने ग़ुस्लख़ाने में पेशाब न करे।''**

(हदीस)

ग़ुस्लख़ाना इसलिए होता है कि आदमी उसमें नहा-धोकर पाक-साफ़ हो और उसके मन में सफ़ाई का एहसास पैदा हो। लेकिन अगर नहाने की जगह पर ही पेशाब किया जाएगा तो यह सफ़ाई की दृष्टि से कभी उचित नहीं हो सकता। ऐसी जगह पर नहाकर भी आदमी के मन में एक प्रकार की नापाकी व अपवित्रता का एहसास बाक़ी रहेगा।

(2) ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने सार्वजनिक स्थानों पर, नदी के घाट पर, साए (छांव) के स्थानों और आम रास्तों पर पाख़ाना-पेशाब करने (और कूड़ा-करकट डालने) से मना किया है। आप (सल्ल॰) फ़रमाते हैं—

**''तीन निन्दित चीज़ों से बचो, अर्थात् घाटों, आम रास्तों और छायादार जगहों पर पाख़ाना-पेशाब मत करो।''**

(हदीस)

नदी और तालाबों के घाटों पर लोग नहाते-धोते हैं, आम रास्तों पर चलते-फिरते हैं और छायादार जगहों, जैसे पेड़ आदि के नीचे लोग आराम करते हैं, इसलिए ऐसी जगहों के गन्दा

होने से लोगों को परेशानी होती है और लोग गन्दगी करनेवाले को बुरा-भला कहते हैं। सार्वजनिक स्थलों और आम रास्तों पर गन्दगी से प्रदूषण और बीमारियां फैलती हैं।

(3) कुछ गन्दगियां ऐसी हैं जिनसे बचने की आमतौर पर लोग कोशिश नहीं करते। इनमें से एक पेशाब की छीटें भी हैं। पेशाब की छींटों से बचने की कोशिश तो दूर की बात है, बहुत से लोग इसे गन्दगी ही नहीं समझते। पेशाब करके लोग सफ़ाई के लिए पानी आदि का इस्तेमाल नहीं करते और पेशाब की बूंदें कपड़ों पर पड़ती हैं। ऐसे लोगों में समाज के हर वर्ग के लोग शामिल हैं, पढ़े-लिखे सुसभ्य और सुसंस्कृत कहे जानेवाले लोग भी और धार्मिक लोग भी। इस्लाम की नज़र में यह एक गन्दगी है और इससे बचना और इसकी सफ़ाई का ख़याल रखना ज़रूरी है। ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने न सिर्फ़ यह कि इनसे बचने का आदेश दिया है, बल्कि इनसे न बचने पर आख़िरत (परलोक) में सज़ा की चेतावनी भी दी है।

(4) पाख़ाने (शौच) के बाद पानी से पाकी हासिल करनी चाहिए तथा हाथ मिट्टी या साबुन से धोने चाहिएं, क्योंकि शौच-कर्म के बाद दुर्गंध हाथ में बाक़ी रह सकती है और यदि सिर्फ़ पानी से हाथ धोया गया तो इससे इसकी अधिक संभावना रहती है कि हाथ गन्दगी के असर से पूरी तरह साफ़ न हो पाए। ऐसा न करने से आदमी के अन्दर घृणा और नफ़रत का एहसास भी बना रहता है, साथ ही बीमारी फैलने का डर हर वक़्त मौजूद रहता है। इसलिए पाख़ाने (शौच) के बाद साबुन या पाक मिट्टी से हाथों को ज़रूर धो लेना चाहिए। ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) इस बात का बड़ा ख़याल रखते थे, जैसा कि निम्न घटना से पता चलता है—

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के प्रिय साथी हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) कहते हैं कि, **''जब अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पाख़ाने जाते तो मैं दो बर्तनों में पानी पहुंचाता। वे पाकी हासिल करते। फिर हाथ को ज़मीन पर रगड़कर धोते। फिर मैं दूसरा बर्तन लाता तब आप (सल्ल॰) वुज़ू करते।''**

(हदीस)

(5) इन्सान के स्वास्थ्य के लिए मुंह और दांतों की सफ़ाई निहायत ज़रूरी है, इस बात से किसे इन्कार हो सकता है। मुंह और दांतों को स्वास्थ्य और तन्दरुस्ती का दरवाज़ा (Gateway of Health) कहा जाता है।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने मुंह की सफ़ाई के बारे में इरशाद फ़रमाया—

**''दातुन (मिस्वाक) करने से मुंह भी साफ़ होता है और परवरदिगार ख़ुदा भी ख़ुश होता है।''** (हदीस)

"रसूलुल्लाह हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की बीवी हज़रत आइशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि **आप (सल्ल॰) घर में आने के बाद सबसे पहले मिस्वाक (दातुन) किया करते थे।''** (हदीस)

(6) सोने से पहले मुंह और दांतों को साफ़ करना बहुत ज़रूरी है। अगर सोते वक़्त आदमी के दांत साफ़ नहीं हैं, तो सोने के बाद मुंह में एक ख़ास तरह का तत्व पैदा हो जाता है, जो दांतों के लिए बड़ा ही नुक़सानदेह होता है। अगर वह तत्व आदमी के पेट में चला जाता है तो उससे मेदे को भी बड़ा नुक़सान पहुंचता है। इसलिए सोने से पहले दांतों को मिस्वाक या ब्रश से ज़रूर साफ़ करना चाहिए। आप (सल्ल॰) ने ज़िन्दगी भर इस बात पर अमल किया है और लोगों के लिए एक नमूना छोड़ा है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) दिन में कई-कई बार दातुन किया करते थे। जब सोकर उठते तो दातुन (मिस्वाक) ज़रूर करते और सोने से पहले भी मिस्वाक ज़रूर करते—

हज़रत आइशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि, **''अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) दिन और रात को उस वक़्त तक न सोते जब तक कि मिस्वाक न कर लेते।''** (हदीस)

(7) खाना पकाने में भी और खाना खाने में भी सफ़ाई-सुथराई का पूरा ख़याल रखना ज़रूरी है। खाने से पहले और खाना खाने के बाद हमेशा हाथों को अच्छी तरह धो लेना चाहिए। ऐसा करना सफ़ाई की दृष्टि से तो ज़रूरी है ही, साथ ही सेहत व स्वास्थ्य के लिए भी बहुत ज़रूरी है। हो सकता है कि आदमी के हाथ में कोई गन्दी और हानिकारक चीज़ लगी हो और वह खाने के साथ पेट में चली जाए और फिर उसके इन्फ़ैक्शन (Infection) से आदमी किसी गम्भीर रोग में ग्रस्त हो जाए। खाने से पहले अगर हाथों को अच्छी तरह धो लिया जाए, तो इससे खाना खाने वाले को इत्मीनान रहता है कि खाने में साफ़-सुथरा हाथ डाला गया है।

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि॰) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया—

**''जिस व्यक्ति को यह बात पसन्द हो कि ख़ुदा उसके घर में भलाई और बरकत पैदा करे तो उसे चाहिए कि खाना खाने से पहले और खाना खाने के बाद हाथ धो लिया करे।''** (हदीस)